

# गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला— ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

## माननीय राज्यपाल द्वारा 36वें दीक्षान्त समारोह में विद्यार्थियों को दी गयी दीक्षा

पंतनगर। 27 नवम्बर 2024। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान के नेतृत्व में 36वें दीक्षान्त समारोह का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ जिसमें महामहिम राज्यपाल ले ज गुरमीत सिंह मुख्य अतिथि और माननीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री श्री गणेश जोशी एवं माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री सड़क परिवहन एवं राजमार्ग श्री अजय टमटा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर सीडीएस जनरल अनिल चौहान और पद्मश्री प्रेम चन्द्र शर्मा को विज्ञान वारिधि की मानद उपाधि से सुशोभित किया गया।

महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह ने कहा कि जो छात्र यहां से उपाधि प्राप्त कर रहे हैं वे अपने माता-पिता से आर्शिवाद जरूर ले। विश्वविद्यालय द्वारा नयी शोध, तकनीक विकसित कर कृषकों तक पहुंचा रहा है, जिससे किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने हनी, अरोमा एवं मिलेट पर बल दिया। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि सपने देखना सही है मगर खुली आंखों से सपना देखना चाहिए जिससे वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। हरित क्रांति लाने में पंतनगर विश्वविद्यालय का अहम योगदान रहा है। विश्वविद्यालय के योगदान के लिए विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हैं और रैंकिंग भी अच्छी है। उन्होंने कहा कि किसानों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए विश्वविद्यालय को बदलते वातावरण की चुनौतियों के अनुसार शोध करने की आवश्यकता है।

श्री अजय कुमार टमटा ने दीक्षान्त समारोह के आयोजन के लिए बधाई देते हुए बदलते वातावरण के अनुसार शोध एवं प्रसार करने के वैज्ञानिकों का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यहां से उपाधि प्राप्त कर देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। श्री गणेश जोशी ने उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों, उनके अभिवाकों एवं गुरुजनों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय उपाधि प्राप्त किये हुए छात्र महत्वपूर्ण संस्थानों में अपना योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि आठ हजार कृषकों को मौन पालन से जोड़ा जा रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में 2025 तक जैविक खेती का स्तर 50 प्रतिशत से अधिक होगा। उनके द्वारा श्री अन्न के उत्पादन पर बल दिया गया और कहा कि सरकार द्वारा महुवा के अलावा अन्य मोटे अनाजों पर भी सब्सिडी मिलनी चाहिए। सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में प्रतिभाग करने पर प्रसन्नता व्यक्त कि और यहां के उपलब्धियों की चर्चा की तथा देश को आगे ले जाने में जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान एवं जय अनुसंधान का बहुत महत्व है। निरंतर नये शोध के द्वारा हम अपनी खाद्यान्न की मांग को पूरा करते हुए आत्मनिर्भर बने रहेंगे। जैनेटिक मोडिफिकेशन जैसे नयी तकनीकों का प्रयोग कर वातावरण की चुनौतियों से निपटा जा सकता है। देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में विश्वविद्यालय की अहम भूमिका होगी। विद्यार्थी नयी सोच के साथ कार्य कर देश को प्रगति के मार्ग पर ले जाने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी भारत की होगी। पद्मश्री श्री प्रेम चन्द्र शर्मा ने अपने अनुभवों को साझा किया और उन्होंने वातावरण को शुद्ध रखने के लिए जैविक एवं प्राकृतिक खेती पर बल दिया।

कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि लैण्ड ग्रान्ट पैटर्न की तर्ज पर अमेरिका के इलिनोय विश्वविद्यालय की तकनीकी सहायता से स्थापित इस विश्वविद्यालय ने हरित क्रांति के द्वारा देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विगत 64 वर्षों से लगातार यह विश्वविद्यालय खाद्य फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के अलावा पशुधन, दुग्ध, तिलहन एवं मत्स्य उत्पादन में भी अपना अहम योगदान दे रहा है। कृषि शिक्षा, अनुसंधान तथा प्रसार में अपने अहम योगदान के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा 'सरदार पटेल आउटस्टैंडिंग इन्स्टीट्यूशन सम्मान' से इसे तीन बार सम्मानित किया जा चुका है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्यू0एस0 वर्ल्ड रैंकिंग में 331वां स्थान बनाया है। स्थापना से अबतक 44112 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गयीं हैं। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की 355 उन्नत किस्में एवं पशुओं की दो नस्लें राष्ट्र को समर्पित हैं, जोकि देश में खाद्य सुरक्षा एवं कृषकों की आय बढ़ाने में अभूतपूर्व रूप से सहायक रहीं हैं। विश्वविद्यालय एग्रीकल्चर लीडरशिप 2023 सम्मान से सम्मानित है। पंतनगर विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्ष 2024-25 से लागू कर दी गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को अपनाने वाला यह देश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय है। देश एवं विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ करार हुए हैं। गत दो वर्षों में दलहन की 10 प्रजातियाँ विकसित की गयी है। अंत में उन्होंने सभी उपाधि प्राप्तकर्ताओं को दीक्षा दी। इस अवसर पर कुलपति के निर्देशन में बनी 'विश्वविद्यालय की गत दो वर्ष की उपलब्धियाँ' नामक पुस्तक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

निदेशक संचार डा. जे.पी. जयसवाल ने बताया कि इस दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल द्वारा 1172 विद्यार्थियों को उपाधि व दीक्षा प्रदान की गयी। इस अवसर पर सर्वोत्तम स्नातक विद्यार्थी दीक्षा उप्रेती को कुलाधिपति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त 15 विद्यार्थियों को कुलपति स्वर्ण पदक, 12 विद्यार्थियों कुलपति रजत पदक एवं 12 विद्यार्थियों को कुलपति कांस्य पदक प्रदान किये गये। विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए एक-एक विद्यार्थी को श्री पूरण आनन्द अदलखा अवार्ड, श्रीमती सरस्वती पांडा गोल्ड मेडल, श्रीमती नागम्मा शान्ताबाई अवार्ड, डा. राम शिरोमणि तिवारी अवार्ड, डा. ए.एन. मुखोपाध्याय गोल्ड तथा दो-दो विद्यार्थियों को चौधरी चरण सिंह मैमोरियल इंटेलेक्चुअल अवार्ड एवं भारत रत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त अवार्ड से सम्मानित किया गया। कुलसचिव, डा. दीपा विनय ने समारोह का संचालन किया एवं अंत में धन्यवाद दिया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रबन्ध परिषद् एवं विद्वत् परिषद् के सदस्यों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों के संकाय सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी तथा प्रदेश सरकार एवं जिला प्रशासन के उच्चाधिकारी उपस्थित थे।



विश्वविद्यालय के 36वें दीक्षान्त समारोह में दीक्षांत व्याख्यान देते महामहिम राज्यपाल, उत्तराखण्ड ले ज गुरमीत सिंह।



विश्वविद्यालय के 36वें दीक्षान्त समारोह में मंचासीन अतिथिगण।